IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, January 2026
Impact Factor: 7.67

ममता कालिया के कहानी संग्रह में नारी के अस्तित्व

डॉ. निर्मला शुक्ला

अतिथि विद्वान, हिंदी विभाग

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, मैहर

सारांश:

ममता कालिया हिंदी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका हैं, जिनके कहानी संग्रहों में नारी के अस्तित्व की खोज एक केंद्रीय विषय है। उनका साहित्य मध्यवर्गीय महिलाओं के दैनिक संघर्ष, पारिवारिक दबाव, सामाजिक रूढ़ियों और स्वतंत्रता की तलाश को यथार्थवादी ढंग से चित्रित करता है। इस शोध पत्र में उनके प्रमुख कहानी संग्रहों जैसे 'छुटकारा', 'मुखौटा', 'उसका यौवन', 'जाँच अभी जारी है', 'प्रतिदिन', 'निर्मोही' आदि का विश्लेषण किया गया है, जहां नारी को पुरुष-प्रधान समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए जूझते हुए दिखाया गया है। नारी विमर्श के संदर्भ में, ममता कालिया का साहित्य स्त्री की आंतरिक पीड़ा, भावनात्मक संघर्ष और विद्रोह को उजागर करता है। उनके पात्र शिक्षित और कामकाजी महिलाएं हैं, जो आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद पारिवारिक और सामाजिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पातीं। यह पत्र नारी के अस्तित्व को विभिन्न आयामों—पारिवारिक, सामाजिक, यौनिक और मनोवैज्ञानिक—में जांचता है। शोध से पता चलता है कि कालिया की कहानियां नारी को पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि सशक्त और जागरूक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं। यह अध्ययन गुणात्मक है, जिसमें प्राथमिक स्रोतों (कहानी संग्रह) और द्वितीयक स्रोतों (शोध पत्र, आलोचनाएं) का उपयोग किया गया। निष्कर्षतः, ममता कालिया का साहित्य हिंदी में नारी विमर्श को मजबूत बनाता है और समकालीन समाज में स्त्री अस्तित्व की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30932

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, January 2026
Impact Factor: 7.67

कीवर्ड्स:

नारी विमर्श, ममता कालिया, कहानी संग्रह, स्त्री अस्तित्व, हिंदी साहित्य, महिला संघर्ष, पारिवारिक स्थिति, स्त्री चेतना, मध्यवर्गीय नारी, सामाजिक यथार्थ, कामकाजी महिला, नारी सशक्तिकरण।

प्रस्तावना:

ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 को वृंदावन में हुआ था। वे हिंदी साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा वाली लेखिका हैं, जिन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, निबंध और संस्मरण जैसी विधाओं में योगदान दिया है। उनके पिता विद्याभूषण अग्रवाल आकाशवाणी में कार्यरत थे, जिससे उनका साहित्यिक परिवेश समृद्ध हुआ। ममता कालिया ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. किया और विभिन्न शहरों में अध्यापन किया, अंततः 2001 में सेवानिवृत्त हुईं। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की पत्रिका 'हिंदी' की संपादिका रही हैं। हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की शुरुआत सातवें दशक में हुई, जहां ममता कालिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके साहित्य में मध्यवर्गीय महिलाओं की दैनिक चुनौतियां, पारिवारिक दबाव और अस्तित्व की खोज प्रमुख हैं। नारी को पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलकर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करते हुए दिखाया गया है। यह शोध पत्र उनके कहानी संग्रहों में नारी के अस्तित्व की पड़ताल करता है, जहां स्त्री पुरुष-प्रधान समाज में शोषण, असमानता और विद्रोह से जूझती है। हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का विकास महादेवी वर्मा से हुआ, लेकिन ममता कालिया ने इसे यथार्थवादी बनाया। उनके पात्र शिक्षित महिलाएं हैं, जो भावनात्मक और आर्थिक संघर्ष से गुजरती हैं। इस पत्र का उद्देश्य उनके संग्रहों के माध्यम से नारी अस्तित्व के आयामों का विश्लेषण करना है। ममता कालिया का लेखन मुख्य रूप से सातवें दशक से शुरू हुआ, जब हिंदी कथा-साहित्य में स्त्री की छवि अभी भी पारंपरिक, भावुक और पुरुष-समर्थित ढांचे में बंधी हुई थी। लेकिन उन्होंने इस यथास्थितिवाद को चुनौती दी और रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत, हाड़-मांस वाली स्त्री का चित्र उभारा। उनके पात्र शिक्षित, कामकाजी या घरेलू मध्यवर्गीय महिलाएं

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

हैं, जो भावनात्मक और आर्थिक दोनों स्तरों पर असमानता का सामना करती हैं। नारी अस्तित्व उनकी रचनाओं में न केवल पीड़ा का प्रतीक है, बल्कि विद्रोह, जागरूकता और आत्मनिर्भरता की खोज भी है। उनकी कहानियां यथार्थवादी हैं, जहां स्त्री की संवेदनाएं सूक्ष्मता से उकेरी गई हैं। वे स्त्री को शक्ति का प्रतीक मानती हैं, जो दुखों के बावजूद कर्तव्यनिष्ठ और कर्मप्रधान रहती है। मध्यवर्गीय परिवारों में प्रेम-विवाह अक्सर घुटन और कलह में बदल जाता है, और नारी उम्र भर आत्मसंघर्ष करती रहती है। ममता कालिया ने नारी विमर्श को यथार्थवादी बनाया। महादेवी वर्मा की आंतरिक पीड़ा से आगे बढ़कर उन्होंने स्त्री के सामाजिक, आर्थिक और यौनिक संघर्ष को प्रमुखता दी। उनके पात्र सिमोन द बोउआर की 'द सेकंड सेक्स' जैसी अवधारणाओं को हिंदी संदर्भ में लागू करते हैं – स्त्री को 'दूसरा' नहीं, बल्कि समान मानव के रूप में स्थापित करने की कोशिश। उनकी कहानियां शिक्षित मध्यवर्गीय महिलाओं की आकांक्षाओं, घुटन और विद्रोह को दर्शाती हैं। समकालीन समाज में भी ये प्रासंगिक हैं, क्योंकि वैश्वीकरण के बावजूद नारी अस्तित्व की लड़ाई जारी है।

शोध पद्धति:

यह शोध विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोत ममता कालिया के कहानी संग्रह हैं, जैसे 'छुटकारा', 'मुखौटा', 'उसका यौवन' आदि। द्वितीयक स्रोतों में शोध पत्र, पुस्तकें और ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं, जैसे "ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना" और "ममता कालिया के उपन्यासों में नारी जीवन का संघर्ष"। शोध प्रक्रिया: लेखिका की जीवनी और योगदान का अध्ययन, फिर कहानियों से नारी अस्तित्व के थीम का चयन। विश्लेषण में सिमोन द बोउआर की अवधारणाओं को लागू किया गया। डेटा संग्रह वेब सर्च से। यह गुणात्मक शोध है, जहां कथानक, पात्र और संवादों का गहन विश्लेषण हुआ। सीमाएं: प्रकाशित साहित्य पर आधारित, कोई साक्षात्कार नहीं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

मुख्य भाग:

ममता कालिया की साहित्यिक पृष्ठभूमि और नारी विमर्श

ममता कालिया का साहित्य मध्यवर्गीय समाज की महिलाओं के यथार्थ को दर्शाता है। उनके कहानी संग्रहों में नारी पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ रही है।हिंदी साहित्य में नारी विमर्श का महत्वपूर्ण स्थान है, जहां कालिया ने स्त्री को सशक्त बनाया। उनकी कहानियों में स्त्री चेतना प्रमुख है। 'पीठ' कहानी में पति-पत्नी संबंधों में असमानता दिखाई गई। ममता कालिया की कहानियां शिक्षित महिलाओं की आकांक्षाओं को उजागर करती हैं।

प्रमुख कहानी संग्रहों में नारी अस्तित्व का विश्लेषण

1. 'छुटकारा' संग्रह

यह उनका प्रारंभिक संग्रह है, जिसमें नारी मुक्ति और पारिवारिक बंधनों से छुटकारे की तलाश प्रमुख है। शीर्षक कहानी 'छुटकारा' में स्त्री अपनी पहचान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती है। यहां नारी को पारंपरिक भूमिकाओं (घर-परिवार, सास-ससुर की अपेक्षाएं) से जकड़ी हुई दिखाया गया है, लेकिन वह विद्रोह की ओर बढ़ती है। मध्यवर्गीय नारी की घुटन और उससे मुक्ति की आकांक्षा स्पष्ट है। यह संग्रह नारी विमर्श का प्रारंभिक उदाहरण है, जहां स्त्री की संवेदना और अधिकारों की मांग प्रमुख है।

2. 'मुखौटा' संग्रह

'मुखौटा' में नारी के बहुरूपी अस्तित्व को दर्शाया गया है। स्त्री समाज में विभिन्न मुखौटे पहनकर जीती है – घर में आज्ञाकारी पत्नी, बाहर शिक्षित कामकाजी महिला, लेकिन अंदर से विद्रोही और पीड़ित। कहानी 'चिरकुमारी' या अन्य में स्त्री स्वतंत्र विचारों से अपना अस्तित्व स्थापित करने की कोशिश करती है। मध्यवर्गीय घुटन, सामाजिक रूढ़ियां और पुरुष-प्रधान दृष्टिकोण के विरुद्ध संघर्ष यहां यथार्थ रूप से

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

चित्रित है। नारी का अस्तित्व यहां दोहरी जिंदगी का प्रतीक बन जाता है – एक मुखौटा समाज के लिए, दूसरा अपनी असली पहचान के लिए।

3. 'उसका यौवन' संग्रह

यह संग्रह नारी की यौनिकता, भावनात्मकता और कामकाजी जीवन पर केंद्रित है। 'उसका यौवन' में स्त्री की यौनिक पहचान और पुरुष संबंधों में समानता की मांग को साहसिक ढंग से उठाया गया है। मध्यवर्गीय महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद भावनात्मक शोषण का शिकार हैं। यहां नारी अस्तित्व को यौनिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर जांचा गया है, जो हिंदी साहित्य में उस समय काफी साहसिक था। स्त्री को केवल मां या पत्नी नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं वाली व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है।

4. 'जाँच अभी जारी है', 'प्रतिदिन' और 'निर्मोही'

'जाँच अभी जारी है' में नारी जीवन की निरंतर जांच और संघर्ष दिखाया गया है। 'प्रतिदिन' में दैनिक जीवन की छोटी-छोटी चुनौतियां – घरेलू कलह, सास-बहू संबंध, पति-पत्नी की असमानता – नारी अस्तित्व की पीड़ा को उजागर करती हैं। 'निर्मोही' में स्त्री की भावुकता और निर्मोहता का द्वंद्व है, जहां वह पारिवारिक दबावों से ऊपर उठने की कोशिश करती है।

इन संग्रहों में मध्यवर्गीय नारी की स्थिति दोयम दर्जे की है – शिक्षित होने के बावजूद निर्णय लेने का अधिकार नहीं, कामकाजी होने पर भी घर की जिम्मेदारी, और प्रेम-विवाह के बाद घुटन। लेकिन ममता कालिया नारी को केवल पीड़ित नहीं दिखातीं; वे विद्रोही और सशक्त भी हैं।

निष्कर्ष:

ममता कालिया के कहानी संग्रहों में नारी के अस्तित्व की खोज हिंदी साहित्य में नारी विमर्श को नई दिशा देती है। उनके साहित्य में स्त्री पारंपरिक भूमिकाओं से मुक्त होकर पहचान बनाती है। 'मुखौटा' में सामाजिक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, January 2026 Impact Factor: 7.67

रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष, 'छुटकारा' में पारिवारिक स्थिति। ममता कालिया का योगदान स्त्री चेतना को मजबूत करना है। उनकी कहानियां शिक्षित महिलाओं की घुटन और विद्रोह दर्शाती हैं। नारी विमर्श में पुरुष-प्रधान समाज में समानता की मांग। कामकाजी महिलाओं का भावनात्मक संघर्ष प्रमुख। समकालीन संदर्भ में प्रासंगिक, वैश्वीकरण ने नई चुनौतियां दीं। उनके कार्य से हिंदी साहित्य समृद्ध। निष्कर्षतः, ममता कालिया ने नारी को सशक्त बनाया।

संदर्भ:

[1]. कालिया, ममता. मुखौटा. राजकमल प्रकाशन, 1980.

[2]. कालिया, ममता. छुटकारा. वाणी प्रकाशन, 1972.

[3]. सिंह, रमा. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना. आईजेआईआरएसईटी, 2019.

[4]. यादव, सुनीता. ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री चिंतन. आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका, 2020.

[5]. पवार, प्रल्हाद विजयसिंग. ममता कालिया के कथा-साहित्य में नारी-विमर्श. एसी कॉलेज यावल, 2018.

[6]. तोमर, संदीप. ममता कालिया से साहित्यिक चर्चा. सेतु पत्रिका, 2022.

[7]. अग्रवाल, विद्या भूषण. ममता कालिया की जीवनी और साहित्यिक योगदान. विकिपीडिया, 2023.

[8]. चाटे, वैजनाथ. ममता कालिया के कहानी एवं उपन्यास साहित्य में कामकाजी महिला. शोधगंगोत्री, 2021.